तित्थयर

वर्ष २२ अंक-५ अगस्त १९९८

जैन भवन

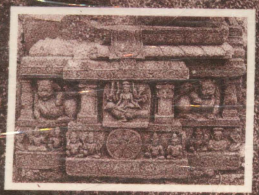

'जिसे तुम मारना चाहते हो वह तुम ही हो।'

Sethia Oil Industries Ltd.

Manufacturers of De-oiled Rice Bran, Mustard De-oiled Cakes, Neem deoiled Powder, Ground-nut De-oiled Cakes, Mahua deoiled cakes etc. And Solvent Extracted Rice Bran Oil, Neem Oil, Mustard Oil etc.

Plant
Post Box No. 5
Lucknow Road
Sitapur-261001 (U.P.)
Ph : 42017/42397/42073
(05862)
Gram - Sethia - Sitapur
Fax : 42790 (05862)

Registered Office
143, Cotton Street
Cal-700 007
Ph : 2384329/
8471/5738
Gram - Sethia Meal

Executive Office
2, India Exchange Pla
Calcutta-700 001
Ph : 2201001/9146/50
Telex : 217149 SOIN I
Fax : 2200248 (033)

तित्थयर

श्रमण संस्कृति मूलक मासिक पत्रिका

जैन भवन
कलकत्ता

वर्ष - २२ अंक - ५, अगस्त १९९८

संपादन
लता बोथरा

लेख, पुस्तक समीक्षा तथा पत्रिका से सम्बन्धित पत्र व्यवहार के लिये
पता - Editor : **Tithayar**, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

विज्ञापन तथा सदस्यता के लिये कृपया सम्पर्क करें -
Secretary, Jain Bhawan, P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007
Subscription for one year : Rs. 55.00, US $ 20.00,
for three years : 160.00, US $ 60.00.
Life Membership : India : Rs. 1000.00, Foreign : US $ 160.00.

Published by Lata Bothra on behalf of Jain Bhawan from
P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007 and Printed by her
at Surana Printing Works, 205 Rabindra Sarani
Calcutta - 700 007, Phone : 239-4393

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	लेख	लेखक	पृ. सं.
१.	दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रवेश और विस्तार	डा° नेमिचन्द शास्त्री	८९
२.	श्रावक जीवन	आचार्यश्री विजयभद्र गुप्त सूरीश्वरजी	९७
३.	राजा सम्प्रति	--	१०३

आवरण चित्र-पाकबिरा से ७वीं से १०वीं शताब्दी की प्राप्त जैन मूर्तिया एवं मन्दिर ।

Composed by
COMPU LASER GRAPHICS, 9, Srimani Ghat Lane, Rishra-712248, Hooghly.

आत्मा के साथ ही युद्ध करो । बाहरी शत्रुओं से युद्ध करने से क्या लाभ ? आत्मा को आत्मा के द्वारा जीतनेवाला मनुष्य सुख पाता है ।

आत्मा स्वयं ही दुःख और सुख की कर्ता है और उनका क्षय करनेवाली भी है । इसलिए सन्मार्ग पर चलनेवाली आत्मा मित्र है और उन्मार्ग पर चलनेवाली आत्मा शत्रु है ।

अपनी आत्मा का ही दमन करना चाहिए क्योंकि आत्मा ही दुर्दम्य है । अपनी आत्मा पर विजय पानेवाला ही इस लोक और परलोक में सुखी होता है ।

दक्षिण भारत में जैन धर्म का प्रवेश और विस्तार

डा° नेमिचन्द शास्त्री

पूर्वानुवृति

अनेक विदेशी विद्वानोंने अपने-अपने इतिहास में तामिल प्रांतकी जैन धर्म की उन्नतिका वर्णन किया है। विशप काल्डवेल का कहना है कि जैनों की उन्नति का युग ही तामिल साहित्य की उन्नति का महायुग है। इन्होंने तामिल, कनड़ी और दूसरी लोकभाषाओं का प्रचार किया, जिससे वे जनताके सम्पर्क में अधिक आए। सरवाल्टर इलियटके मतानुसार दक्षिण की कला और कारीगरी पर जैनों का अमिट प्रभाव है। तामिल प्रदेशमें जैनों के द्वारा ही अहिंसाका विशेष प्रचार हुआ, जिससे जनता ने मद्य, मांस और मधु भक्षण का भी त्याग कर दिया था। ब्राह्मणों पर जैनों की अहिंसा का इतना अधिक प्रभाव पड़ा कि यज्ञों में भी हिंसा बन्द हो गई। जीव हिंसा-रहित यज्ञ किए जाने लगे। कुछ विद्वानों का अभिमत है कि विग्रहाराधना, पुराणपुरूषोंकी पूजा, गणपति पूजा, देवस्थान-निर्माण-प्रथा और जीर्णोद्धार-क्रिया प्रभृति बातें शैव और वैष्णव मतों में जैन सम्प्रदाय की देखादेखी प्रचलित हुई। अतएव तामिल देशमें ई° पू° ३०० से लेकर ई° ११०० तक जैन धर्म का खूब प्रचार हुआ, किंतु इसके अनन्तर शैव और वैष्णवों के धर्मद्वेष के कारण प्रभावहीन हो गया।

कर्णाटक– इस प्रांतमें जैन धर्मका विस्तार बहुत हुआ; वहाँकी राजनीति, धर्म, संस्कृति, साहित्य, कला, विज्ञान, व्यापार प्रभृति सभी बातें जैन धर्म से अनुप्राणित थी। अनेक जैन राजाओं के साथ-साथ ऐसे निष्णात विद्वान, कवि, कलाकार और प्रभावक गुरू हुए, जिनका प्रभाव दक्षिण प्रांतकी कर्णाटक भूमिके कण-कणपर विद्यमान था। सामाजिक, धार्मिक और राजनैतिक सभी मामलों में जैनाचार्यो का पूरा-पूरा हाथ था, उनकी सम्मति और निर्णयके उपरान्त ही किसी भी सांस्कृतिक कार्य का प्रारम्भ होता था। भद्रबाहु स्वामीके संघके पहुँचनेके पहले भी यहाँ जैन गुरूओंको सम्मानजनक स्थान प्राप्त था ' मौर्य साम्राज्य के बाद इस प्रांतमें आन्ध्रवंशका शासन

स्थापित हुआ, इस वंश के सभी राजा जैन धर्म के उन्नायक रहे हैं। इनके शासनकाल में सर्वत्र जैन धर्म का अभ्युदय था। इसके पश्चात् उत्तर-पूर्व में पल्लव और उत्तर-पश्चिम में कदम्ब वंशके राज्य इस प्रांतमें स्थापित हुए। कदम्ब वंशके अनेक शिलालेख उपलब्ध हैं, जिनमें इस वंशके राजाओं द्वारा जैनों को दान-देनेका उल्लेख है। इस वंशका धर्म जैन था।

कदम्बवंश के समान चालुक्य वंश के राजा भी जैनधर्मानुयायी थे। पल्लव वंशके राजाओं के जैन होने के सम्बन्ध में ऐतिहासिक उल्लेख नहीं मिलता है पर भगवान् नेमिनाथ का विहार पल्लव देश में होने से तथा उस समय के समस्त दक्षिण के वातावरण को जैन धर्म से अनुप्राणित होने के कारण प्राचीन पल्लव वंश भी जैन धर्म का अनुयायी रहा होगा। चालुक्य नरेशों ने अनेक नवीन जैन मन्दिर बनवाए तथा उन्होंने अनेक मन्दिरों का जीर्णोद्धार कराया था। कन्नड़ के प्रसिद्ध जैन कवि पम्प का भी सम्मान इस वंश के राजाओं द्वारा हुआ था।

गंगवंश– कर्णाटक प्रांतमें जैन धर्म के प्रसारकों में इस वंशके राजाओं का प्रमुख हाथ है। इतिहास बतलाता है कि दक्षिण भारतीय गंगराजाओं के पूर्वज गंगानद-प्रदेशवासी इक्ष्वाकुवंशी क्षत्रिय थे। इनकी सन्तान परम्परा में दडिग और माधव नाम के दो शूरवीर व्यक्ति उत्पन्न हुए, जिन्होंने पेरूर नामक स्थान पर जाकर आचार्य सिंहनन्दी का शिष्यत्व ग्रहण किया। उस समय पेरूर जैन संस्कृति का प्रमुख केन्द्र था, यहाँ पर जैन मन्दिर और जैन संघ विद्यमान था। आचार्य ने इन दोनों को राजनीति और धर्मशास्त्रकी शिक्षा देकर पूर्ण निष्णात बना दिया तथा पद्मावतीदेवी से उनके लिए वरदान प्राप्त किया। आचार्यकी शिक्षा और वरदान के प्रभावसे इन दोनों वीरोंने अपना राज्य स्थापित कर लिया तथा कुवलाल में राजधानी स्थापित कर गंगवाडी प्रदेशपर शासन किया। गंगराजाओं का राजचिह्न मदगजेन्द्र लाञ्छन और उनकी ध्वजा पिच्छ चिन्ह से अंकित थी। उस समय जैन धर्म राष्ट्रधर्म था, और इसके गुरू केवल धार्मिक गुरू ही नहीं थे, बल्कि राजनैतिक गुरू भी थे।

दडिगने जैन धर्म के प्रसार के लिए मंडलि नामक स्थानपर एक लकड़ीका भव्य जिनालय निर्माण कराया, जो शिल्पकला का एक सुन्दर नमूना था। क्योंकि उस युग के मन्दिर केवल दर्शकों की भक्ति पिपासा को ही शान्त

नहीं करते थे, बल्कि धर्म, साहित्य, संस्कृति के प्रचार के प्रमुख केन्द्र स्थान भी माने जाते थे। गंगराजाओं में अवनीत के गुरू जैनमुनि कीर्तिदेव और दुर्विनीतके आचार्य पूज्यपाद थे। इस वंशका एक राजा मारसिंह द्वितीय था, यह इतना पराक्रमी और साहसी था कि इसने चेर, चोल और पाण्डय वंशो पर विजय प्राप्त कर ली थी। जीवनके अन्तिम समय में इसे संसार से विरक्ति हो गई थी, जिससे इसने विपुल ऐश्वर्य के साथ राज्यपद त्याग दिया और धारबार प्रान्त के बांकापुर नामक स्थान में अपने गुरू अजित सेनाचार्य के सम्मुख समाधिपूर्वक प्राणत्याग किया था।

गंगवंश के २१ वें राजा राच मल्ल सत्यवाक्यके शासन कालमें उसके मंत्री और कवि चामुण्डरायने श्रवणबेल्गोल स्थानमें श्रीगोमट्टेश्वरकी विशाल प्रतिमा की प्रतिष्ठा कराई थी। चामुण्डरायकी वीरमार्त्तण्ड, चूड़ामणि, त्रिभुवन वीर, वैरीकुलकालदण्ड, सत्य युधिष्ठिर अनेक उपाधियां थी। मंत्रि प्रवर चामुण्डराय जैन धर्म के बड़े भारी उपासक थे, इन्होंने अपना गुरू आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त-चक्रवर्तीको माना है। वीरताके साथ विद्धता भी इनमें पूरी थी, संस्कृति और कन्नड़ दोनों ही भाषाओंपर पूर्ण अधिकार था। चारित्रसार संस्कृत भाषामें रचा गया इनका प्रसिद्ध ग्रन्थ है, कन्नड़ में इन्होंने त्रिषष्ठि लक्षण महापुराण नामक प्रसिद्ध ग्रन्थ रचा है। चामुण्डराय ने जैन धर्म की उन्नतिके लिए अनेक कार्य किए हैं। इस प्रकार गंगवंश के सभी राजाओंने मन्दिर बनवाए, मन्दिरों के प्रबन्धके लिए भूमि दान की और जैन गुरूओंको सम्मान देकर साहित्य और कलाका सृजन कराया। दुर्विनीत, नामकर्म, गुणवर्म प्रथम चामुण्डराय इत्यादि अनेक उल्लेखनीय जैन कलाकार गंगवशंके राज्यकालमें हुए हैं।

गंगवंशकालीन जैन साहित्य और कला– गंगराज्यकालमें संस्कृत और प्राकृत भाषाके साहित्यकी विशेष उन्नति हुई। अशोक के शासन-लेखों और सातवाहन एवं कदम्ब राजाओंके सिक्कोंपर अंकित लेखोंसे प्रकट है कि इस युग में प्राकृत भाषाका व्यवहार संस्कृतके साथ-साथ ब्राह्मण और जैन दोनों ही विद्वान् करते थे। ७वीं और ८वीं शतीमें गंगवाडिमें अधिक संख्यामें आकर जैन बस गए थे, तब वहाँ संस्कृत साहित्यकी पवित्र मन्दाकिनी प्रवाहित हुई; जिसकी कल-कल ध्वनिसे अष्टशती, आप्तमीमांसा, पद्मपुराण, उत्तरपुराण, कल्याण कारक प्रभृति रचनाएँ प्रस्फुटित हुई।

संस्कृत और प्राकृत के साहित्य के साथ-साथ कन्नड़ भाषा का साहित्य भी उन्नति की ओर अग्रसर हो रहा था, प्राचीन कन्नड़, जो कि साहित्यिक भाषा थी, उसका स्थान नवीन कन्नड़ ने ले लिया था। इसमें पूज्यपाद, समन्तभद्र जैसे युग प्रवर्त्तक प्रसिद्ध आचार्यो ने भी साहित्य का निर्माण किया। इस युग में कुछ ऐसे कवि भी हुए है, जो तीनों भाषाओंके– संस्कृत, प्राकृत और कन्नड़ के विद्वान् थे। गुणवर्मने गंगराजा ऐरेयप्पके समयमें 'हरिवंश' की रचना की थी। इन्ही के समकालीन कवि पम्प बहुत प्रसिद्ध कवि हुए हैं, इन्हें कविता गुणार्णव, पूर्णकवि, सज्जनोत्तम आदि विशेषणोंसे सम्बोधित किया गया है। इस महाकवि ने लोककल्याण की भावनासे प्रेरित होकर आदिपुराण, विक्रमार्जुन विजय लघुपुराण, पार्श्वनाथपुराण और परमार्ग नामक ग्रन्थोंकी रचना की है।

पम्प के समकालीन महाकवि पोन्न और रन्न भी है। इन दोनों कवियोंने भी कन्नड़ साहित्य की श्रीवृद्धि में अपूर्व योग दिया है। पोन्न का शान्तिनाथपुराण और रत्नका अजितनाथपुराण कन्नड़ साहित्य के रत्न हैं। इनके अतिरिक्त आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती ने उभय भाषाओं में ग्रन्थ रचना की है।

कला– गंगवाडिमें स्थापत्य और शिल्पकला की विशेष उन्नति हुई थी। उस समय समस्त दक्षिण भारत में दर्शनीय भव्य मन्दिर, दिव्य मूर्तियाँ, सुन्दर स्तम्भ प्रभृति मूल्यवान् विशाल कृतियाँ स्थापित हुई। गंगवाडि की जैनकला बिल्कुल भिन्न रही। गंगवंशके समस्त राजाओं ने जिनालयों का निर्माण कराया था। मन्दिरों की दीवाल और छतों पर कहीं-कहीं नक्कासी और पच्चीकारीका काम भी किया गया था। कोई-कोई मंदिर दो मंजिलके भी थे और चारों ओर दरवाजे रहते थे। पाषाण के सिवा लकड़ी के जिनालय भी बनवाए गए थे। इस युगमें मूर्ति निर्माण कला में भी जैन लोग बहुत आगे बढ़े-चढ़े थे; प्रसिद्ध बाहुबली स्वामी की मूर्त्ति इसका ज्वलन्त निदर्शन है। यह मूर्त्ति आज भी दुनिया की आश्चर्यजनक वस्तुओं में से एक है।

मन्दिर के अतिरिक्त गंगराजाओं ने मण्डप और स्तम्भों का भी निर्माण कराया था। जैन मण्डप पाँच स्तम्भके होते थे, चारों कोनों पर स्तम्भ लगानेके अतिरिक्त बीचमें भी स्तम्भ लगाया जाता था और इस बीच वाले स्तम्भ की विशेषता यह थी कि वह ऊपर छतमें इस प्रकार फिट किया जाता

था जिससे तली में से रूमाल आर-पार हो सकता था। ये स्तम्भ मानस्तम्भ और ब्रह्मदेवस्तम्भ, इन दो भेदों मे विभक्त थे।

ई० पू० १००४ में जब गंगनरेशोंकी राजधानी तलकादको चोल राजाओंने जीत लिया तो फिर इस वंशका प्रताप क्षीण हो गया। इसके पश्चात् दक्षिण भारत में होय्सल वंशका राज्य प्रतिष्ठित हुआ। इस वंश की उन्नति भी जैन गुरूओंकी कृपासे हुई थी। इस वंशका पूर्वज राजा सल था। कहा जाता है कि एक समय यह राजा अपनी कुलदेवी के मन्दिर में सुदत्त नामके जैन साधु से विद्या ग्रहण कर रहा था, इतनें में वनसे निकलकर एक बाघ सलको मारने के लिए झपटा। साधु ने एक डण्डा सलको देकर कहा– 'पोप सल' – मारसल। सल ने उस डण्डे से बाघ को मार डाला और इस घटनाको स्मरण रखनेके लिए उसने अपना नाम पोपसल रखा, आगे जाकर यही होय्सल हो गया। गंगवंश के समान इस वंशके राजा भी विट्टिमदेव तक जैन धर्मानुयायी रहे और जैन धर्म के प्रसारके लिए निरन्तर उद्योग करते रहे। जब रामानुजाचार्य के प्रभावमें आकर विट्टिमदेव वैष्णव हो गया, तो उसने अपना नाम विष्णुवर्द्धन रखा। इसकी पहली धर्मपत्नी शान्तलदेवी कट्टर जैनी थी। उसीके प्रभावके कारण इस राजाने जैन धर्म के अभ्युदयके लिए अनेक कार्य किए।

विष्णुवर्द्धन का मंत्री गंगराज तो जैन धर्म का स्तम्भ था। श्रवणबेल्गोलके शिलालेखों में कई शिलालेख उनकी दानवीरता और धार्मिकता की दुहाई देते हैं। विष्णुवर्द्धन के उत्तराधिकारी नरसिंह प्रथम के मंत्री हुल्लास ने भी इस धर्म को दक्षिण में फैलाने का प्रयत्न किया। वस्तुतः मैसूर प्रांत में इन दोनों मंत्रियों ने तथा चामुण्डरायने जैन धर्म के प्रसारके लिए अनेक कार्य किए हैं।

होय्सल के पश्चात् बड़े राजवंशों में राष्ट्रकूटका नाम आता है, इस वंशके प्रतापी राजाओं के आश्रय से जैन धर्म का अच्छा अभ्युदय हुआ। मान्यखेट इनकी राजधानी थी, इस वंशमें अनेक राजा जैन धर्मानुयायी हुए हैं और सभीने अपने-अपने शासनकाल में जैन धर्म की प्रभावना की है। अमोघवर्ष प्रथम का नाम जैन धर्म की उन्नति करने वालों में बड़े गौरव के साथ लिया जाता है। यह राजा जैन धर्म का बड़ा भारी श्रद्धालु था, इसने अन्तिम अवस्था में राज-पाट छोड़कर जिनदीक्षा अपने गुरू जिनसेनाचार्य

से ले ली थी । अमोघवर्षने जिनसेनाचार्य के शिष्य गुणभद्राचार्य को भी प्रश्रय दिया था । सम्राट् अमोघवर्षने अपने उत्तराधिकारी कृष्णराज द्वितीय के लिए गुणभद्राचार्य को गुरू नियुक्त किया था । श्रवणबेल्गोल की पार्श्वनाथवसति शिलालेख से प्रकट है कि सम्राट् कृष्णाराज की राजसभा में जैन गुरूओं का आगमन होता था तथा वह यथोचित सत्कार करते थे । इस वंशमें उत्पन्न हुए चारों इन्द्र राजाओं ने जैन धर्म को धारण किया था तथा उसके प्रचार और प्रसार के लिए अनेक यत्न भी किए थे । यद्यपि अन्तिम राजा इन्द्रको राज्यकी व्यवस्था करने में पूर्ण सफलता नही मिली थी, जिससे उसने जिनदीक्षा ग्रहण कर ली थी ।

कलचुरि वंश के नरेशों ने तामिल देशपर चढ़ाई की थी और वहाँ के राजाओं को परास्त करके अपना शासन स्थापित किया था । ये राजा जैन धर्म के अनुयायी थे, इनके पहुँचने से तामिल देशमें जैन धर्म का प्रचार हुआ था । इस वंशके राजाओंका राष्ट्रकूट नरेशों से घनिष्ठ सम्बन्ध था, इनमें परस्पर वैवाहिक सम्बंध भी हुए थे ।

इन प्रधान राजवंशों के अतिरिक्त नोलम्ब, सान्तार, चांगल्व, व्योङ्गल्व, पुन्नाट, सेनवार, सालुव, महाबलि, एलिनका रट्ट, शिलाहार, चेल्लकेतन, पश्चिम चालुक्य प्रभृति राजवंशों के अनेक राजा जैन धर्मानुयायी थे । इन वंशोंके जो राजा जैन धर्म का पालन नहीं भी करते थे उन्होंने भी जैन धर्म की उन्नति में पूरा सहयोग प्रदान किया था । इस प्रकार कर्णाटक के सभी राजाओं ने जैन धर्म विस्तार किया ।

जैन कला और साहित्य– राष्ट्रकूट प्रभृति उपर्युक्त राजाओं के कालमें जैन साहित्य और कलाकी दृष्टि से विचार करनेपर ज्ञात होता है कि जैन कला और जैन साहित्यका विकास इस समय में बहुत हुआ है । राष्ट्रकूट और चालुक्य वंशोंके राज्यकाल में जैन धर्म के प्राबल्यने समस्त कर्णाटक को अहिंसामय बना दिया था; जिसके फलस्वरूप राष्ट्र खूब फला-फूला, देश में सुख समृद्धिकी पुण्यधारा बही । फलतः मानव समाजके हृदयका आनन्द अपनी संकुचित सीमाको पारकर बाहर निकलने लगा, जिससे कला और साहित्यका प्रणयन अधिक हुआ । कला, और साहित्य प्रेमी इन राजाओं के दरबार में साहित्यिक ज्ञान गोष्ठियाँ होती थी, इन गोष्ठियों में होनेवाली चर्चाओं में राजा लोग स्वंय भाग लेते थे । राष्ट्रकूट वंशके कई राजा कवि

और विद्वान् थे, इससे इनकी सभामें कवि और विद्वान् उचित सम्मान पाते थे। धवला और जयधवला टीकाओंका सृजन राष्ट्रकूट वंशीय राजाओं के जैन साहित्य प्रेमका ज्वलन्त निदर्शन है। दर्शन, व्याकरण, काव्य, पुराण, ज्योतिष, गणित, आयुर्वेद प्रभृति विभिन्न विषयों पर अनेक मौलिक रचनाएँ लिखी गई।

इस कालके जैन कवियों ने दूतकाव्य और चम्पूकाव्य की परम्परा प्रकट कर काव्यक्षेत्र में श्रृंगार रसके स्थानपर शांतरसका समावेश किया। जिनसेनाचार्य का पार्श्वाभ्युदय, आदिपुराण, वर्द्धमानपुराण, पार्श्वस्तुति; सोमदेवाचार्य का यशस्तिलक चम्पू, नीतिवाक्यामृत; गुणभद्राचार्य का आत्मानुशासन, उत्तर पुरान, जिनदन चरित्र; वादिराज का यशोधरचरित, पार्श्वनाथचरित, एकीभावस्तोत्र, कुकुत्सथचति, न्यायविनिश्चय विवरण और वादमंजरी; महावीराचार्य का गणितसार संग्रह शाकटानाचार्य का शाकटायन व्याकरण तथा उसकी टीका अमोघवृत्ति प्रभृति संस्कृत जैन रचनाएँ उल्लेखनीय है। अपभ्रंश भाषामें कवि पुष्णदन्तका महापुराण, जसहर चरिउ; णायकुमार चरित; कवि धवलका हरिवंश पुराण, कवि स्वयंभूका हरिवंशपुराण, पउम चरिय, देवसेन का सावयवम्म दोहा और अभयदेव सूरिका जयतिहुयण स्तोत्र इत्यादि ग्रन्थ भी जैन साहित्यकी अमूल्य निधि हैं। ग्रन्थों के अतिरिक्त कन्नड़ भाषामे भी काव्य, पुराण, नाटक, वैद्यक, ज्योतिष, नीति प्रभृति विभिन्न विषयोंपर अनेक ग्रन्थ लिखे गए थे।

साहित्यकी उन्नतिके साथ जैनोंने कलाके क्षेत्रमें भी प्रगति की थी। राष्ट्रकूट, चालुक्य, कदम्ब, होय्सल इत्यादि वंशके राजाओं ने अनेक जैन मन्दिर और जैन मूर्त्तियों का निर्माण कराया था। यद्यपि जैनोंने अपनी कलाको शांतरस से ओत-प्रोत रखा था तथा अपने धार्मिक सिद्धांतों के अनुसार मूर्त्ति और मन्दिरों पर वीतरागताकी ही भावनाएँ अंकित की थी, फिर भी सर्वसाधारण के लिए आकर्षण कम नहीं था। अमरेश्वरम् में एक मन्दिर की छंतमें संग्राम के दृश्य से अंकित एक पत्थर लगा है, जिसमें किला बना हुआ है, धनुषबाण चल रहे हैं। नगर और कोटका ऐसा सजीव अंकन किया गया है, जो दर्शकों के घ्यानको अपनी और आकृष्ट किए बिना नहीं रह सकता। श्रवणगुडी में एक जैन मठ के पास खड़े हुए पाषाणों में *एक घुड़सवार अपने भालेसे एक पियादे के तलवार वारको रोकता हुआ*

दिखलाया गया है । कई चित्र तो शांति के मूर्त्तिमान प्रतीक हैं ।

ऐहीले और इलोरा के जैन मन्दिरों में मानस्तम्भ भी मिलते हैं । जैन मानस्तम्भों के विषय में विलहौस सा° ने लिखा है :-

"The whole capital and canopy of Jain pillors are a wonder of light, elegant, highly decorated stone work; and nothing can surpass the stately grace of these beautiful Pillors, whose proportions and adaptations to surrounding scenery are always Perfect, and whose richness of decoration never offends."

अर्थात् जैन स्तम्भों की आधार शिला तथा शिखर बारीक, सुन्दर और समलंकृत शिल्पचातुर्य की आश्चर्यजनक वस्तु हैं । इन सुन्दर स्तम्भों की दिव्य प्रभासे कोई भी वस्तु समानता नहीं कर सकती । ये प्राकृतिक सौंदर्य के अनुरूप ही बनाये गए हैं । नक्कासी और महत्ता इनकी सर्वप्रिय है ।

कलापरिपूर्ण मन्दिर और मूर्त्तियों की प्रशंसा भी अनेक विद्वानों ने मुक्त कण्ठ से की है । इस तरह जैन धर्म दक्षिण भारत में अपना प्रभुत्व १३ वीं सदी तक स्थापित किए रहा । शंकराचार्य, शैवानुयायी राजा एवं अन्य धार्मिक विद्वेषों के भंयकर झोंके लगने पर भी इस धर्म का दीपक आज भी दक्षिण में टिमटिमा रहा है ।

श्रावक जीवन

आचार्य श्री भद्रगुप्त सुरीजी महाराज

श्रावक सचित्त भोजन का त्यागी हो :

इस भोगोपभोग विरमण व्रत का पालन करने के लिए, श्रावक को पांच अतिचारों से बचना चाहिए। इस व्रत के जो पाँच अतिचार बताए गए हैं, उन अतिचारों का स्वरूप देखते हुए ऐसा मालूम होता है कि श्रावक सचित्त (सजीव) आहार का त्यागी होना चाहिए। ग्रंथकारों को यही अभिप्रेत लगता है। दूसरी बातें गौण लगती हैं।

और, ये पांच अतिचार 'भोग-विरमण' के ही हैं, 'उपभोग-विरमण' के अतिचार बताए ही नहीं हैं। ग्रंथकारों का अभिप्राय हम नहीं जान सकते। इतना अभिप्राय स्पष्ट है है कि श्रावक को सचित्त भोजन नहीं करना चाहिए ! सचित्त भोजन का त्याग करना चाहिए श्रावक को।

सचित्त-अचित्त :

शायद आप लोग 'सचित्त-अचित्त' शब्दों से अपरिचित होंगे। कुछ भक्त लोग जानते होंगे...। ज्यादातर अनाज, कठोल, साग, और फल सजीव यानी सचित्त होते हैं। तिल, राई, जीरा, अजवायन, मुंगफली जैसे तैलीपदार्थ अचित्त (निर्जीव) ही होते हैं। सभी अनाज और कठोल बिना पकाया हुआ सचित्त कहलाता है, पकाने का बाद 'अचित्त' हो जाता है। श्रावक पकाए हुए अनाज और कठोल का भोजन करता है।

सब्जी भी सचित्त होती है। उसको पकाने से अचित्त बन जाती है। कच्ची सब्जी नहीं खानी चाहिए।

वैसे, पपीता, चीकू, आम वगैरह फल सचित्त होते हैं। परंतु फलों का छिलका उतार कर, उसको काट कर, बीज निकाल कर, ४८ मिनिट रख दिया जाय, बाद में वह अचित्त बन जाता है। मात्र 'केला' ऐसा फल है कि जिसका छिलका निकालते ही वह अचित्त हो जाता है ! उसको ४८ मिनट रखने की जरूरत नहीं रहती है।

फलों का रस (ज्यूस) भी ४८ मिनट के बाद ही अचित्त बनता है।

प्रश्न : ४८ मिनट में रस का स्वाद बिगड़ जाता होगा न ?

महाराजश्री : नहीं बिगड़ता है । अच्छे बरतन में रखने से स्वाद नहीं बिगड़ता है । दूसरी बात यह है कि श्रावक 'रसास्वाद' को महत्व नहीं देता है । श्रावक की दृष्टि जीवदया की होती है ।

अचित्त भोजन का कारण जीवदया :

श्रावक जानता है कि किस किस वस्तु में जीवत्व है । और जीवत्व के प्रति श्रावक के हृदय में मैत्री, प्रेम...और स्नेह होता है । वह उसका भक्षण कैसे कर सकता है ?

प्रश्न : सचित्त को अचित्त बनाने में जीवहिंसा तो होती है न ?

महाराजश्री : होती है, परंतु जो अनिवार्य होता है, उतना ही अचित्त किया जाता है । निरर्थक अथवा मात्र आनन्द-प्रमोद के लिए सचित्त को अचित्त नहीं बनाया जाता है । विशेष कर, जो वनस्पति होती है उसका, श्रावक ज्यादातर त्यागी होता है । चूंकि वनस्पति का जीवत्व विशेष रूप से संवेदनशील होता है । उस में सुख-दुःख का संवेदन ज्यादा होता है । इस दृष्टि से जैन समाज में ज्यादातर लोग पर्वतिथि के दिनों में सब्जी का त्याग करते हैं । जो लोग इसका मूल-भूत कारण नहीं समझते हैं वे इस त्यागभावना का उपहास करते हैं । आज की दुनिया में मनुष्य का जीवत्व के प्रति प्रेम नहींवत् हो गया है ।

प्रश्न : प्रेम है ही नहीं !

महाराजश्री : इसलिए तो हिंसाजन्य पदार्थ भोजन में आने लगे हैं । आज कौन सी तिथि है–यह भी लोग जानते नहीं हैं । सभी तिथि समान ! नहीं करना है तप, नहीं करना है त्याग ! फिर तिथि का खयाल किस लिए करना चाहिए ? Date से सारा जीवनव्यबहार चलता है !

अचित्त भोजन करने में यही प्रमुख हेतु है– जीवत्व का प्रेम । श्रावक के हृदय में जीवप्रेम होता ही है । जिसके हृदय में जीवप्रेम नहीं, वह श्रावक नहीं ।

आप शायद कहेंगे कि पानी में असंख्य जीव हैं, उसको उबालने से (गर्म करने से) पानी अचित्त होता है, परंतु उबालने से असंख्य जीवों की हिंसा तो होती है न ? श्रावक वह हिंसा करता है, तो उसका जीवप्रेम कहां रहा ?

सही बात है ! परंतु पानी जीवन में अनिवार्य तत्त्व है । पानी के बिना जीवन संभव नहीं है । तो फिर पानी सचित्त पीना उचित या अचित्त पीना उचित ? श्रावक जानता है कि पानी में असंख्य जीव हैं । फिर वह जिंदा जीवों को कैसे पेट में उतार सकता है ? वहाँ उस पानी को निर्जीव करना उसके लिए अनिवार्य बन जाता है । वह हृदय में दुःख अनुभव करता है । उसके हृदय में दर्द होता है । इसी प्रकार भोजन में भी समझना है । श्रावक के भोजन में कम से कम द्रव्य होंगे । वह जीने के लिए भोजन करता है, भोजन के लिए जीता नहीं है । पानी उबालने पर भी उसका जीवप्रेम अखंड रहता है । वह पानी की एक बूंद का भी दुरूपयोग नहीं करेगा ।

किसी की आलोचना मत करें,
स्वयं श्रावक बनें !

प्रश्न : आप कहते हैं वैसे श्रावक तो दिखते ही नहीं !

महाराजश्री : नहीं दिखते हैं तो आप वैसे श्रावक बन जाय ! आप को अच्छे श्रावक देखकर दूसरे लोग भी अच्छी प्रेरणा लेंगे और वे श्रावक बनेंगे। मैं जो श्रावक के भोजन की बात करता हूं, वह दूसरे श्रावकों की आलोचना-निंदा करने के लिए नहीं है, परंतु आप लोग यदि श्रावक बनना चाहें तो आपका भोजन कैसा होना चाहिए, उसका मार्गदर्शन देता हूं । दूसरों में जो गुण नहीं हो, आप में हो सकता है वह गुण !

अपनी बात श्रावक-जीवन के विशेष धर्म की चल रही है । विशेष धर्म, सभी लोग तो स्वीकार कर नहीं सकते ! बहुत थोड़े लोग ही विशेष धर्म की आराधना कर सकते हैं । और उनकी आराधना दूसरे लोगों की निगाह में आए ही, ऐसा नियम नहीं है । जो गुणदृष्टि वाले लोग होते हैं, वे ही देख सकते हैं । दोषदृष्टि वालों को किसी व्यक्ति में गुण दिखायी नहीं देता है ।

श्रावक अचित्त भोजन ही पसंद करता है । किसी विशेष परिस्थिति में सचित्त करना पड़ता है, तो उस के हृदय में दुःख होता है । वह दुःख दूसरों को नहीं दिखता है, दूसरों को तो उसका सचित्त भोजन दिखेगा ! उसकी परिस्थिति का अंदाजा लिए बिना करने लगेगा आलोचना !

भोजन में कोई एकान्त नियम नहीं होते हैं । इसलिए 'प्रशमरति' ग्रंथ में उमास्वातीजी ने कहा है –

देशं कालं पुरूषमवस्थामुपयोग-शुद्धि परिणामान् ।

प्रसमीक्ष्य भवति कल्पयं, नंकान्तात् कल्पते कल्पयम् ॥

कैसा भोजन कल्य और कौन सा भोजन अकल्य, उसका निर्णय देश, काल, व्यक्ति, अवस्था, उपयोगशुद्धि और मन के परिणाम के आधार पर करना चाहिए। एकान्ततः कल्य कल्य नहीं है। अकल्य अकल्य नहीं है। यह सिद्धान्त आप लोग जानते नहीं ही। इसलिए बड़ी गड़बड़ हो रही है समाज में। श्रावक बनने के लिए, ये सारी बातें गंभीरता से समझने की हैं। अब मैं आपको इस भोगोपभोग-विरमण व्रत के पांच अतिचार बताता हूं!

इस व्रत के पांच अतिचार :

१. सचित्त वस्तु का त्याग करने पर, गल्ती से सचित्त-भक्षण न हो जाय, उसका खयाल रखने का है। गल्ती से सचित्त भक्षण होने पर अतिचार लगता है।

२. सचित्त बस्तु के साथ सम्बद्ध अचित्त वस्तु खाने पर भी अतिचार लगता है। इसलिए वैसी वस्तु नहीं खाना है।

३. सचित्त–अचित्त मिश्र (मीक्स) वस्तु खाने पर अतिचार लगता है।

४. सचित्त पदार्थ अर्ध पक्व हो, पूरा पका नहीं हो, वैसा खाने से अतिचार लगता है, इसलिए अर्ध पक्व भोजन नहीं करना चाहिए।

५. जो वस्तु खाने से तृप्ति नहीं होती हो, वैसा खाने से भी अतिचार लगता है। नहीं खानी चाहिए वैसी वस्तुयें।

खाने मे सावधानी आवश्यक :

– बिना पकाए चावल वगैरह नहीं खाने चाहिए। 'यह अनाज तो अचित है,' ऐसा समझकर भी नहीं खाना चाहिए।

– वृक्ष सचेतन होता है, उस पर लगे हुए परिपक्व फलों को अचित मानकर नहीं खाने चाहिए। वैसे 'खजूर तो अचित है, वह खा जाऊंगा और उस में रहा हुआ बीज फेंक दूंगा...' ऐसा समझकर नहीं खाना चाहिए। इसी प्रकार आम आदि फलों के विषय में समझने का है। सचित प्रतिबद्ध आहार नहीं करना चाहिए, यदि आपने सचित का त्याग किया है तो!

– आधा पका हुआ, आधा कच्चा धान्य, फल वगैरह नहीं खाना चाहिए।

– चावल, गेहूं, ककड़ी वगैरह अर्ध पक्व खाने से (अचित्त मान कर) अतिचार लगता है।

– जिस वस्तु का त्याग किया हो, प्रतिज्ञा से त्याग किया हो, उसका

भोग-उपभोग करने से अतिचार लगता है । यह भोगोपभोग अनजान पन से करने से अतिचार लगता है । जानबूझकर करता है तो व्रत का भंग हो जाता है ।

तुच्छ-असार औपधि (अपक्व) का भक्षण करने से अतिचार लगता है । जिस से तृप्ति नहीं होती है वैसा भोजन करने से अतिचार लगता है । श्रावक वैसे तुच्छ फल वगैरह का भक्षण नहीं करता है । रसनेन्द्रिय की लोलुपता बढ़े, वैसा भोजन श्रावक नहीं करता है ।

उपभोग-परिमाण :

जिस प्रकार भोग-परिमाण करना है, वैसे उपभोग-परिमाण भी करना चाहिए । सर्व प्रथम घर/मकान/बंगलों का परिमाण करना चाहिए । कुछ समय से श्रीमंत लोग अपने पैसों का इन्वेस्टमेंट मकानों में करते हैं । उन लोगों को पैसे की ही चिंता बनी रहती है । आत्मा की चिंता होती ही नहीं है ! यदि आप लोगों को (श्रीमंतों को) व्रतधारी बनना है तो मकान का परिमाण करना होगा ।

प्रश्न : पैसा ज्यादा हो जाय तो क्या करें ?

महाराजश्री : साधर्मिकों का उद्धार करों ! जिन मंदिरों का निर्माण करो । जैन साहित्य का प्रचार-प्रसार करो ! गुप्त दान करो, ताकि सरकार भी परेशान नहीं करेगी ।

जैसे मकान का परिमाण करना है वैसे वस्त्रों का भी परिमाण करना आवश्यक है । कम से कम वस्त्र रखने चाहिए । कुछ वर्षों से वस्त्रपरिधान का शौक बढ़ गया है । महिलाओं में और युवक-युवतियों में बहुत ज्यादा शौक बढ़ा है । वस्त्रों का फैशन बढ़ गया है । श्रीमंत लोग हों या मध्यम वर्ग के लोग हों...अरे, मज़दूर लोगों में भी वस्त्रों की फैशन बढ़ा है । व्रतधारी को सादगी से जीना है । यदि दो जोड़ी कपड़ों से चलता है तो तीसरी जोड़ी नहीं रखनी है ।

उपसंहार :

समग्र जीवन व्यवहार को नियंत्रित और संयमित करने का यह व्रत है ! जीवन में तीन महत्वपूर्ण बातें होती हैं—रोटी, कपड़ा और मकान ! इस व्रत से इन तीनों बातों पर नियंत्रण आ जाता है और जीवन सुव्यवस्थित बन जाता है । बनाना है न जीवन को सुव्यवस्थित ?

प्रश्न : हम लोगों का जीवन अनियंत्रित और असंयमित बन गया है...संयममय जीवन की चाह ही नहीं रही !

महाराजश्री : तो फिर रोग, अशान्ति, संताप और क्लेशों के शिकार बन जाओगे। बाह्य सुख-सुविधायें होने पर भी आप सुख-शान्ति का अनुभव नहीं कर पाओगे। सुख-सुविधायें...सुख के साधन बढ़ने पर भी, यदि आपका जीवन संयमित नहीं होगा, तो आप आंतर प्रसन्नता अनुभव नहीं कर पाओगे। असंयमित जीवन आपको दुःख और क्लेशों की गहरी खाई में धकेलता रहेगा। मानव जीवन व्यर्थ चला जाएगा। भविष्यकाल अंधकारमय बन जाएगा। इसलिए ज्ञानी पुरूष त्याग और संयम का उपदेश देते हैं। आप लोग संयम के मार्ग पर चलते हुए परम आत्महित प्राप्त करें, यही मंगल कामना।

क्रमशः

राजा सम्प्रति

किन्तु चन्दा जैसे ही अवन्ती के राज-भवन से गायब हुई कि तत्काल श्यामाके मन में अनेक प्रकारकी कल्पनाएँ होने लगीं। "कहींवह मेरा भेद लेने तो नहीं आई थी ? और मैं भी राँड कितनी भोली हूँ कि उसके मिथ्या मोह जाल में फँसकर अपने हृदय की गुप्तबात उसके सामने प्रकट कर बैठी। अथवा उसके जैसी एक अपरिचित स्त्रीको मैंने अपनी अधीनता में रक्खा, यही बड़ी भूल हुई ! और रखलेने पर भी उसके सामने अपने हृदयकी बात प्रकटकर देना दूसरी भयङ्कर भूल हुई। अस्तु। जो कुछ हुआ सो सही ! उसके जैसी एक कङ्गाल छोकरी मेरा क्या बिगाड़ सकती है ? यदि यह भी मानलिया जाय कि वह मेरी बातका असल रहस्य ही लेने आई हो, तब भी क्या हुआ ? यदि मेरे पैरकी जूति फट भी जाय तो उसमें कौन बड़ी हानि हो जाती है ! जिससे मैं उस तुच्छ छोकरी के लिए इतना अधिक विचार करूँ ? मेरी सत्ता, मेरे वैभव और सारे ठाट-पाट के सामने उसकी क्या बिसात हो सकती है ?

चन्दाने सुनन्दा के पास आकर सब बातें कह सुनाईं। उसने तिष्यरक्षिता के नाटक का अभिनय और श्यामाको फुसलाकर उसके मनकी बात निकालने के लिए किए गए प्रयत्न की सब बातें विस्तारपूर्वक कह सुनाईं। कुणाल सूरदास और शरतश्री को भी अपनी सौतेली माता के नीच कर्म का पता लगा। उस तिष्यरक्षिता के कुटिल पन के कारण ही अपनी आँखें खोकर अन्धा बनजाने का रहस्य कुणाल को ज्ञात हो गया; क्यों कि इस उपाय के द्वारा ही उसने अपने पुत्र महेन्द्र को युवराज बनाकर राज्य का उत्तराधिकारी सिद्ध किया था; अतएव कुणाल को उस राजपाट एवं स्वार्थपूर्ण षड़यन्त्र के प्रति घोर घृणा हो गई। उसने मन ही-मन कहा—"धिक्कार है उस राजमुकुट को, जिसके मोहके कारण ऐसे-ऐसे क्रूरकर्म किए जाते हैं ! राजा को अन्त में नरकवास होने की जो बात शास्त्रकारोंने लिखी है, वह मिथ्या कदापि नहीं है। अपने तुच्छ स्वार्थ के लिए मनुष्य किस प्रकार नीच से नीच कर्म करते हुए भी नहीं हिचकता। ओह ! पिता के पत्र में केवल 'अ'कारपर बिन्दी लगाकर उसने कितना अनर्थ कर डाला ? तिष्यरक्षिता तूने पूर्वजन्म

का पूरा-पूरा वैर-बदला चुका लिया !" किन्तु इस प्रकार के विचारों से खिन्न हुए मन को वह प्रभु-भक्ति में प्रवृत्त कर देता । जो कुछ होना था, वह तो हो ही गया । उसे सुधार सकने की शक्ति अब किसी में भी नहीं थी । इस प्रकार शत्रुके मनोरथ सफल हो जाने की बात तो वह भली-भाँति जानता था; किन्तु इसे भी वह अपने पूर्वजन्म के कर्मों का दोष मानकर वह कुणाल सच्चा प्रभुभक्त बनने के लिए सतत प्रयत्न कर रहा था ।

एकदिन युग-प्रधान आर्य सुहस्ति स्वामी के एक शिष्य अपने शिष्य समुदाय के साथ गुरूकी आज्ञासे कुणाल के ग्राम में चातुर्मास करने ठहरे और उनके दर्शनार्थ कुणाल और शरतश्री तथा उनके परिवार के मनुष्य आदि भी आए । फलतः चार-मास के सतत उपदेश के फलस्वरूप-कुणाल एवं शरतस्त्री भी प्रभुभक्ति रूप सुवर्ण में कुन्दन के समान शोभित जैनतत्व के रङ्गमें-रङ्गकर केवल शुद्ध उच्च भावनामय बनगए । मुनिने अपनी विद्वत्तासे अनेक शङ्काओंका समाधान करके कुणाल को जैनधर्म में स्थिर किया । यद्यपि उस वैरागी कुणालका मन साधुव्रत पालन करने के लिए बहुत ही लालायित हुआ; किन्तु मुनिने उसे यह समझाकर शान्त किया कि :– "तुम्हें गृहस्थाश्रम में रहते हुए ही, जहाँ तक भी हो सके धर्माराधन करना चाहिए । आँखें न होने से जीवदयाका कार्य नहीं हो सकता और इसके विरूद्ध चारित्र की आराधना करनेपर विराधना होने के ही संयोग उपस्थित हो सकते हैं । इसलिए गृहस्थ-अवस्थामें ही जैनधर्म की आराधना करते रहो । धर्म के प्रभावसे सब कुछ भला ही होगा ।"

"प्रभु ! अब मेरे लिए क्या अच्छा और क्या बुरा ? जीवन में मेरे लिए कुछ भी आंशा शेष नहीं रहगई है । कोई लालसा भी नहीं है । मेरा समय आत्मकल्याण में ही व्यतीत हो, यही केवल मेरे लिए अब शेष-कर्त्तव्य है !" कुणाल ने निवेदन किया ।

"आत्मकल्याण करना ही मानव-जीवनकी सार्थकता है । अनेक प्रपञ्चों से परिपूर्ण चक्रवर्ती जैसों के महल में भी जो शान्ति दुर्लभ है, उस शान्तिका अपूव आनन्द आत्मतत्त्वके सच्चे अभ्यासी, त्यागी पुरूष ही कर सकते हैं । धर्म के अभ्यासी पुरूषको मृत्युका भी भय नहीं होता । सुख या दुःखमें अपना कियाहुआ धर्म ही बन्धुके समान उसकी सहायता करता हैं । इसलिए सदैव धर्म का ही आराधन करते रहो ।"

अन्ध कुणाल गुरूका वचन अङ्गीकार करके यम-नियम एवं व्रत-पालन करते हुए अपनी कायाका दमन करने लगा और मुनिगण भी चातुर्मास पूर्ण हो जानेपर अपने परिवार सहित वहाँ से अन्यत्र विहार कर गए ।

अठारहवाँ परिच्छेद

एक भिखारी

"अरर्र ! यम के सहोदर के समान इस दुर्भिक्ष अकालको तो देखो ! अरे रे; आज तो कोई भिक्षा देना भी नहीं समझता । दिन उगते ही अनेक मनुष्य अन्न के बिना मर रहे हैं, किन्तु किसे किसकी पड़ी है कि उन्हें बचावे ? प्रभु ! प्रभु ! दो-दो तीन-तीन दिन में भी एकबार खाने को नहीं मिलता ! भला, पानी पी-पी कर भी कहाँ तक जिया जा सकता है ? हाय ! मौत भी तो नहीं आती कि इस पापमय जीवन से मुक्ति मिलं सके । क्या करूँ ? कहाँ जाऊँ ? और यह कष्ट-कथा भी किसे सुनाऊँ ?" वत्स देश की राजधानी कौशम्बी नगरी में हजारों भिखारी अन्नके लिए भटकते-फिरते थे । उन्हींमे से एक छप्पन जैसे भूखे-दुर्बल अकालग्रस्त के ये उद्धार थे । वे गरीब रङ्क बेचारे रोटी के एक एक टुकड़े के लिए घर-घर भटकते फिरते थे । धनवानों के द्वारपर धरना देकर बैठने पर उनके नौकर लोग लकड़ियों की मार का स्वाद चखाकर उन गरीबों को भगा देते थे । उन बेचारों के लिए जब स्वप्नमें भी अन्न दुर्लभ हो रहा था तो फिर जागृत अवस्थाकी तो बात ही क्या ? वे पशुओं के समान वनस्पतियाँ खाकर भी अपना मानव-जीवन टिकाए रखने का व्यर्थ प्रयत्न करते थे । अन्न के लिए हाथों से सिर भी पीटलेते थे, किन्तु फिर भी उनके भाग्यमें अन्न नहीं था ! इसप्रकार हजारों मानव बिना अन्न के भूखों मरते और पानी के बिना मछलीकी तरह तड़पते थे । हजारों मानव मौतकी गोद में बिना अन्न के सो रहे थे और हजारों खाऊँ-खाऊँ करते हुए इस लोकको छोड़कर परलोककी ओर गमन कर रहे थे । कई भिखारी अन्न के लिए रूदन कर रहे थे, किन्तु वह रूदन ध्वनि किसी भी दातारके कानों तक नहीं पहुँचपाती थी, कि जो जगडुशाहकी तरह बाहर आकर लाखों निराश मानवों को आशा का अवलम्बन दे सकते !

अन्न के लिए हाथ-पैर घिसता हुआ कोई एक भिखारी अपना भाग्य आजमाने के लिए नगर में भीख माँगने निकल पड़ा । पिछले तीनदिन से उसके पेट में अन्न का एक दाना भी नहीं पड़ा था । निरन्तर अन्न के अभावके

कारण उसका चेहरा मृतक के समान निस्तेज हो गया था। उसकी चलने की शक्ति भी मन्द हो गई थी। फिर भी उसका यह अन्तिम प्रयास था। वह कौशाम्बी के सभी धनवानों के द्वारपर पहुँचा; किन्तु लकड़ी की मार अथवा गालियों की बौछार सिवाय उसे और कुछ नहीं मिला। अन्तमें वह निराश होकर धनपाल नामक सेठके द्वारपर पहुँचा। बहां बड़ी देरतक खड़ा हुआ वह रोटीके एक टुकड़े के लिए करूण याचना करता रहा, किन्तु किसी ने भी ध्यान नहीं दिया।''

इतने ही में आचार्य सुहस्ति स्वामी के दलके दो साधु गुरू की आज्ञा से धनपाल सेठके घर में भिक्षालेने जा पहुँचे। साधुओं को देखते ही धनपाल सार्थवाह एकदम उठ खड़ा हुआ; और अत्यन्त आदर पूर्वक दोनों हाथ जोड़े विनीत वचनों-द्वारा उनकी स्तुति करने लगा। उसने उनके साधु-धर्म का अनुमोदन करते हुए गद्‌गद् कण्ठसे भक्ति-पूर्वक बारम्बार वन्दना की।

इसके बाद धनपाल ने अपनी पत्नी-द्वारा सिंहकेशरिया मोदक तथा अन्य कई प्रकारकी उत्तमोत्तम मिठाइयाँ मँगवाकर उन दोनों मुनियों को भक्तिपूर्वक बहराया। इसप्रकार उन दम्पतिने भाव-पूर्वक मुनियों को आहार प्रदान कर सेवा-भक्ति की। साथ ही बारम्बार अपनी चरण रजसे इसीप्रकार घरको पवित्र करते रहने के लिए भी निवेदन किया। उसने अपना उद्धार करने-विषयक कृपा करने की भी अभिलाषा व्यक्त की और इस समग्र सेवा-भक्ति के बदले में 'धर्मलाभ' का अपूर्व आशीर्वाद देकर वे दोनों मुनि वहाँ से चलदिए।

''मुनियों के प्रति की जानेवाली धनपाल सेठकी सेवा भक्तिको वह भिखारी बाहर खड़ा हुआ देख रहा था। अतः अपने को लकड़ियों की मार और गालियों का दान देनेवाले उस सेठकी मुनियों को भक्तिपूर्वक दान देने और मुनियों-द्वारा उससे स्वीकार करने की क्रिया से वह आश्चर्य-चकित हुआ। ''ओहो ! संसार में इन साधुओं को धन्य है; जिन्हें ऐसे धनवान भी देवताओं के समान वन्दन करते हैं। इसी से इनका जीवन सफल हो रहा है। इनकी यह भिक्षावृत्ति भी स्वर्ग से अधिक महत्त्वपूर्ण है कि जिन्हें अमृत से भी अधिक और मुझ जैसे भिखारी के लिए स्वप्न में भी दुर्लभ ऐसे 'सिंहकेशरिया' लड्डुओं की भिक्षा मिल रही है ! जब कि हम नारकी प्राणियों के समान करूण शब्दों में भिक्षा की याचना करते हुए और अत्यन्त

दीनता दिखाने पर भी कहीं से अन्नका एक दाना तक नहीं पाते ! समयकी कैसी विचित्रता है !''

ऐसी दशा में भी कभी कोई नाममात्र के लिए थोड़ा सा कुछ देता भी है तो वह कितने तिरस्कार और गालियों की बौछारके साथ कि हमारे लिए वह विष-मिश्रित या जहरके समान हो जाता है । अतएव इन दयारूपी साधुओं से मैं प्रार्थना करूँ कि ये उस भिक्षामें से कुछ मुझे भी प्रदान करें ।'' इसप्रकार विचार करता हुआ वह भिखारी उनके बाहर आनेकी राह देखने लगा ।

जब दोनों मुनि धनपाल के घरसे निकलकर अपने स्थानकी ओर चले तो भिखारी भी उनके पीछे-पीछे चल पड़ा; और कुछ दूर जानेपर उनसे याचना करने लगा कि :- ''हे भगवन्त ! दो-दो तीन-तीन दिन हुए मैं भूखके कारण कष्ट से मरा जा रहा हूँ । फिर भी कोई मुझे अन्नका एक दाना तक नहीं देता ! – अतः आप यदि थोड़ासा अन्न देने की कृपा करें, तो आपको जीवदयाका महान् पुण्य-लाभ होगा । एक जीव मरने से बच जायगा ।''

''हे भद्र ! हम तो केवल यह भिक्षा ले जाने मात्र के अधिकारी हैं ।'' उनमें से एक मुनिने कहा ।

''कैसे ! आप सरीखे साधु भी इसप्रकार असत्य भाषण करते हैं ? आश्चर्य है ! अहो-हो ! संसार कैसा हो गया है ! कितना कठिन समय आगया है !'' यह कहते हुए वह एकदम खिन्न एवं उदास हो गया ।

उसकी दया जनक स्थिति देखकर एक मुनिने कहा :- ''हम सत्य ही कह रहे हैं कि हे भद्र ! हम तो केवल इस भिक्षाका अन्न उठानेवाले सेवकमात्र ही हैं ।''

''तो यह सब आप किसके लिए ले जा रहे हैं ? किसके पास जा रहे हैं ?'' भिक्षुक ने पूछा ।

''इसके स्वामी तो हमारे गुरू हैं । हम यह भिक्षा उन्हीं के पास ले जा रहे हैं ।''

''तब तो मैं भी आपके गुरू के पास चलता हूँ । वे अवश्य मुझपर दया करेंगे !'' भिक्षुक ने अत्यन्त दयाजनक मुखाकृति बनाते हुए कहा ।

''इस विषय मेंहम कुछ भी नहीं कह सकते ।'' यों कह कर दोनों साधु चल दिए ।

इधर वह अन्नका अर्थी भिखारी भी इसप्रकार उनके पीछे-पीछे चलपडा.

मानों वह भक्ति भावसे किसी महापुरूष की सेवा में जा रहा है ! थोड़ी ही देर में वह भी उनके साथ उपाश्रय में जा पहुँचा ।

दैवयोग से उस जमानेके युगप्रधान, महान् समर्थ एवं जैनशासन के नायक आर्यसुहस्तिस्वामी उस समय उपाश्रय के बाहर चबूतरे पर खड़े हुए थे । उनके सम्मुख आकर दोनों साधुओंने वन्दना की । यह देखकर उस भिखारी ने भी उन्हें गुरू मानकर प्रणाम किया और अन्न-भिक्षा के लिए उनसे याचना करने लगा; किन्तु इस अभूतपूर्व घटना को देखकर आचार्य सुहस्तिस्वामी आश्चर्य में पड़ गए । उन्होंने समझ लिया कि निश्चित ही इस घटना में दैवका कोई अज्ञात सङ्केत होना चाहिए ।"

गुरूको विचार में पड़ते देखकर वे शिष्य-साधु भी कहने लगे–"भगवन्! अत्यन्त दयाकी मूर्ति के समान इस भिखारी ने मार्ग में हम से भी अन्न की याचना की थी !"

अपने शिष्यों के वचन सुनकर उन महामनस्वी गुरूने जो कि वर्धमान समय के युगप्रधान एवं दशपूर्वके ज्ञाता थे; अपने श्रुतज्ञान के द्वारा उसके भावी जीवन का पता लगा लिया । वे मन-ही-मन अत्यन्त आश्चर्य-पूर्वक विचार करने लगे :- "ओहो ! इसका भविष्य कितना उज्ज्वल है ! यह आत्मा भविष्य में जैन-शासन का आधार बनेगी–प्रभावक होगी ! इसप्रकार ज्ञानके द्वारा उसका उज्ज्वल भविष्य देखकर गुरूवरने कहा :- वत्स ! इस साधु के पात्र में पड़ा हुआ भोजन तो हम से किसी भी प्रकार से किसी को दिया नहीं जा सकता ।"

"किस कारण नहीं दिया जा सकता ? भगवन् ! आप तो दयामय जैन धर्मी कहे जाते हैं ! जीव-दयाके प्रतिपालक होकर भी यदि आप मुझपर दया नहीं करेंगे तो मैं मर जाऊँगा । अन्न-अन्न करता हुआ यह शरीर छोड़ दूँगा ।"

"यदि तुझे हमारे पास से भिक्षा पाना ही है तो एक काम करना होगा ।"

"और वह काम.....! कहिए, कहिए सूरीश्वर ? अपनी भूख मिटानेके लिए चाहे जैसा काम करने को मैं तैयार हूँ ।"

"मुनियों के पात्र में पड़ा हुआ भोजन केवल मुनिलोग ही पा सकते हैं, कोई गृहस्थ नहीं । अतः यदि तू हम से दीक्षा लेना स्वीकार करे, तो यह

अन्न-भोजन तू पा सकता है ! यही नहीं, वरन् इससे भी बढ़िया मनोवाञ्छित भोजन तुझे प्राप्त हो सकेगा ।"

"हे भगवन् ! यह तो बहुत ही अच्छी बात है । अपने कल्याणकी कौन इच्छा नहीं करेगा ? जन्म से ही भिखारी होने के कारण मैं यह दुःख भोग रहा हूँ । इसकी अपेक्षा इस व्रतका कष्ट सहन करना पड़े, यह क्या बुरा है ? कम-से-कम इस में अच्छा-अच्छा भोजन तो मिल सकेगा !" इसप्रकार कहते हुए गुरूकी बातको द्रुमकने सहर्ष स्वीकार कर लिया ।

इसके बाद सुहस्तिस्वामीने द्रुमकको दीक्षा देकर मोदक खानेके लिए बिठाया, और गुरूने उसे बिल्कुल थोड़ी आयुका जानकर उसकी भाव वृद्धि के लिए दूसरे एक साधुके साथ इस नए साधुको साध्वियों के उपाश्रय में भेज दिया । वहाँ आजके इस नव-दीक्षित साधुकी धनवानों की रमणियों तथा पुत्रियों ने भावपूर्वक वन्दना की । साध्वियों ने भी भावभक्ति से उसे वन्दन किया । इससे वह नव-दीक्षित साधु मन-ही-मन विचार करने लगा कि :- "अहो ! मैंने अपने जीवन में कभी देखातक नहीं, ऐसा अपूर्व भोजन मिला, साथ ही ऐसी उच्चकुलकी-धनाढयों की पुत्रियाँ भी किस प्रकार भाव पूर्वक मुझे वन्दन कर रही हैं । इसीप्रकार ये महान् गुणवती साध्वियाँ भी मेरी वन्दना करती हैं । यह सब केवल चारित्र-धर्मकाही फल है । जब कि मैंने तो केवल भोजन के लिएं ही साधु की दीक्षा स्वीकार की है ।" इसप्रकार उच्च परिणामवाले उस नव-दीक्षित साधुको लेकर वे मुनि फिर गुरूके पास लौट आए ।

मध्याह्न के समय उस नव-दीक्षित साधुने इतना अधिक भोजन कर लिया था कि उसकी श्वासोछासकी गति भी मन्द हो गई ! उसमें भी फिर मोदक के समान मधुर एवं मिष्ट भोजन के मादक आहार के कारण वायुपुरित धौंकनी के समान उसका पेट फूल गया ! श्राद्ध में भोजन करनेवाले ब्राह्मण के समान वह थोड़ी देर तक तो सोया ! किन्तु अत्यन्त घृतयुक्त एवं अत्यधिक परिमाण में किया हुआ भोजन न पचनेके कारण शूलकी व्याधिवाले घोड़ेकी तरह द्रुमक को गुप्ररूप से विशुचिका हैजा हो जाने से वह पृश्वीपर इधर-से-उधर लोटने लगा ।

यह देख गुरू महाराजने उसकी अन्तिम इच्छा तृप्त करने के लिए पूछा- "वत्स ! अब तुम्हारी क्या इच्छा है ?"

दुःख से पीड़ित द्रुमक साधुने कहा– "प्रभु ! जहाँ आपके समान साक्षात् कल्पवृक्ष फलते हों, वहां अब मुझे क्या इच्छा हो सकती है ? इस समय तो आप ही मेरे लिए शरण दाता होनेकी कृपा करें; जिससे कि आपकी शरण में ही मेरी शुभगति हो सके ।"

द्रुमककी अल्प आयु के अब अन्तिम श्वासोछास जान लेने से उसके भाव बढ़ाने के लिए गुरूने धन-सम्पन्न श्रावकों को उसकी सेवा करने के लिए भेजा । साथ ही साधुओं ने भी निर्दोष औषधिसे उसकी सेवा करना आरम्भ किया । इसप्रकार बड़े-बड़े साधुओं तथा उन महान ऋद्धि एवं समृद्धिवाले श्रावकों को, जो कि उसे गालियाँ देते थे, उन्हें आज अपनी सेवा में उपस्थित देखकर चकित हो गया । कोई उसके पैर दबा रहा था, तो कोई पेटपर दवाई लगा रहा था और कोई माथे पर दवाई मल रहा था । इसप्रकार अपनी सेवा होती देखकर द्रुमक साधु के मन में अन्तिम शुभभाव का उदय हुआ कि :- "ओहो ! मैं कौन हूँ ? कि जिसकी सेवा में ऐसे बड़े-बड़े मुनिजन एवं श्रीमान् लोग लगे हुए हैं ! यह सब मेरे अव्यक्त 'सामयिक' का ही प्रभाव है । साधु धर्मका ही यह माहात्म्य है कि जिस मुनिधर्म के सम्मुख बड़े-बड़े श्रीमान भी नमन करते हैं । अहा ! अन्तमें मरते समय भी मुझे दीक्षा प्राप्त हो सकी यह बहुत ही अच्छा हुआ ।" इत्यादि विचार करता और अनेक श्रीमन्तों से सेवित वह द्रुमक साधु आयुष्यपूर्ण होने से मृत्युको प्राप्त हुआ और श्रावकों ने उस मुनि के शरीर की योग्य प्रकार से मृत्युक्रिया सम्पन्न की ।

उन्नीसवाँ परिच्छेद

आशा की एक किरण

"भगवन् ! विश्ववत्सल ! हमारी ओर भी तो देखिए । सुखका स्वप्न दिखाकर किस पाप के कारण हमें इस अथाह दुःख के गर्त में डाल दिया है, कि अभी तक हम बाहर निकलने के लिए समर्थ नहीं हो सके हैं ?" "अरे ! हमने क्या सोचा था और क्या हो गया ? मनुष्य क्या सोचता है और विधाता उस विरूद्ध न जाने क्या कर बैठता है ? इस दुनिया से उद्धार पाने और शत्रु के मनोरथ को निष्फल करने का अब तो केवल एक ही उपाय रह जाता है, और वह उपाय हे दैव ! अब केवल तेरे ही हाथ में है ! तूने वक्र होकर जैसे हमारी अधोगति की है, उसी प्रकार अब हमारा उद्धार भी

कर ! हमारी मनोकामना पूर्ण कर !" प्रभात की झाँकी की रमणीय झाँकी के दर्शन में थोड़ी ही देर थी । उस अवसर पर एक मध्यम श्रेणी के भवन की बैठक में शय्यापर पड़ी हुई एक प्रौढ़ा महिला इस प्रकार विचार कर रही थी । उस गौराङ्गनाका स्वभाव किंचित् उग्र था । हुकुम चलाने की आदत सी थी; किन्तु दीर्घकाल के दुःखमय जीवन से उसका मन हमेशा खिन्न रहता था; किन्तु उसका स्वभाव स्त्रियोचित माया-ममता-मय होने के कारण किसी समय की अपनी समृद्धिका अपने विरोधी को उपभोग करते देख उसके अन्तर में अत्यन्त क्लेश होता था । उसी दुःख में से उसमें धैर्य, गम्भीरता, स्थिरता और सहन शक्ति आदि गुणों का विकास हुआ था । फिर भी उसके जीवन में एक महत्त्वपूर्ण आशा शेष थी । उसी आशा-पाश से बँधी हुई वह प्रौढ़ महिला दुःख में अपने दिन व्यतीत करती हुई जी रही थी । पाठक समझ ही गए होंगे कि वह प्रौढ़ा कुणाल की धात्री सुनन्दा ही थी । यद्यपि कुणाल का राजकीय अधिकार तो शेष हो गया था; किन्तु फिर भी जो घटनाएँ विधिके हाथ में थीं, उनमें आशा रखकर ही वह जी रही थी । उस आशा की पूर्ति करना तो देव के ही आधीन था । फिर भी मनुष्य जब अत्यन्त दुःख से व्याकुल हो उठता है, तब भी वह भविष्य की किसी अज्ञात शुभ आशा से प्रेरित होकर जीवन व्यतीत करता ही है । फिर भले ही वह आशा दैवाधीन ही क्यों न हो ! इस प्रकार वह दैवपर विश्वास रखना सीखता है । दैव को अनुकूल बनाने के लिए पुण्यकृत्य या धर्मकर्म करने की उसके हृदय में सद्भावना जागृत होती है ।

गरीब बेचारी सुनन्दा ! वह भी एक परावलम्बनवाली आशा से भाग्यपर भरोसा रखकर जी रही थी, और इसी आशा ही के बीच वह विचारों के प्रवाह में डूबी हुई थी । इतने ही में उसके पास सोयी हुई चन्दाने उस विचारधारा को भङ्ग करते हुए पूछा :- "जीजी ! जाग रही हो न ?"

"क्यों ? तू क्या कहना चाहती है चन्दा ?" विचार-तन्द्रासे जागृत होकर गम्भीर मुखमुद्रा धारण करते हुए सुनन्दा ने पूछा !

"मुझे तो ऐसा जान पड़ता है कि अब किसी भी दशा में हमारा उद्धार सम्भव नहीं और इसी अवस्था में हमारा समय व्यतीत होना दुर्दैवने निर्माण कर दिया है । फिर भी मन में बड़ी-बड़ी महत्त्वाकांक्षाएँ कैसे उत्पन्न होती

होंगी ?" इस प्रकार चन्दाने कुछ न कुछ प्रश्न खड़ा करके बातों का सिलसिला शुरू किया ।

"चन्दा ! कुछ भी हो ! फिर भी मैं एक भावी शुभ आशा के सहारे ही जी रही हूँ । तू भी अपने स्वामीकी ऐसी दशा देखकर युवावस्था होते हुए भी अखण्ड ब्रह्मचर्य का पालन करती हुई संसार छोड़कर बैठी है ! तो क्या दैव इतना कठोर हो जायगा ? क्या वह हमपर दया नहीं करेगा ?" सुनन्दा ने उसे आश्वासन दिया ।

"मेरी समझ में नहीं आता कि वह किस प्रकार हमारी सहायता कर सकेगा ? क्या वह कुणाल कुमार को फिर से दृष्टिवान् बना सकेगा ? उनके गए हुए लोचन फिर प्राप्त हो सकेंगे ? भगवन् ! भगवन् ! क्या मरे हुए मनुष्य भी कभी जीवित हो सकते हैं ?" चन्दाने निराशपूर्ण उद्‌गार निकाले।

"चन्दा ! यह सब कदाचित न हो सके; किन्तु एक बात तो अवश्य हो सकती है, जिसपर कि आशा रखते हुए मैं जी रही हूँ ।"

चन्दा सुनन्दा के शब्द सुनकर चौंकी । उसने आतुरतासे पूछा :- "ज़ीजी ! वह बात क्या है ?"

"वह यही कि शरत बहुरानी के लिए शुभ दिवस तो आ सकता है नँ ? यदि उसकी कोंखसे दैवेच्छा-वश कोई भाग्यवान पुत्र जन्म ले सके तो....." कहते-कहते सुनन्दा रूक गई ।

"तो क्या ?" चन्दाने पूछा– "वह पुत्र क्या कर सकेगा ?"

"सम्भव है, उस पुत्र के पुण्य से हमारा खोया हुआ वैभव फिर प्राप्त हो सके ! यही नहीं, वरन् हम अपने शत्रुके मनोरथ को भी विफल कर सकें ?" सुनन्दा ने अपने मनकी बात कह सुनाई ।

"तुम्हारी इच्छानुसार यदि हो सके तो कदाचित हम फिर पनप सकते हैं ? क्या इस प्रकार तुम्हें विश्वास होता है ?"

"मैं तो शरत के अच्छे दिनकी ही प्रतीक्षा कर रही हूँ । चन्दा ! उसके बाद भी हमें तो यथाशक्ति अपना प्रयास करना ही है १ फल तो दैवाधीन ही है !"

क्रमशः

JAIN BHAWAN PUBLICATIONS

P-25 Kalakar Street, Calcutta - 700 007

English			
1.	*Bhagavati-sütra* - Test edited with English translation by K.C. Lalwani in 4 volumes;		
	Vol-I (śatakas 1-2)	Price : Rs.	150.00
	Vol-II (śatakas 3-6)		150.00
	Vol-III (śatakas 7-8)		150.00
	Vol-IV (śatakas 9-11)		150.00
2.	James Burges - *The Temples of Śatruñjaya*, Jain Bhawan, Calcutta, 1977, pp. x+82 with 45 plates	Price : Rs.	100.00
	[It is the glorification of the sacred mountain *Śatruñjaya.*]		
3.	P.C. Samsukha - *Essence of Jainism* translated by Ganesh Lalwani.	Price : Rs.	10.00
4.	Ganesh Lawani - *Thus Sayeth Our Lord*		10.00
Hindi			
5.	Ganesh Lalwani - Atimukta (2nd edn.) translated by Shrimati Rajkumari Begani		40.00
6.	Ganesh Lalwani - Śraman Samskriti ki Kavitä		20.00
7.	Ganesh Lalwani - Nílänjanä translated by Shrimati Rajkumari Begani		30.00
8.	Ganesh Lalwani - Candana-Mürti, translated by Shrimati Rajkumari Begani		50.00
9.	Ganesh Lalwani - Vardhamän Mahavír		60.00
10.	Ganesh Lalwani - Barsät kí Ek Rät		45.00
11.	Ganesh Lalwani - Pañcadaśí		100.00
12.	Rajkumari Begani - Yädó ke Äine më		30.00
Bengali			
13.	Ganesh Lalwani - Atimukta		40.00
14.	Ganesh Lalwani - Śraman Samskrti Kavitä		20.00
15.	Puran Chand Shyamsukha - Bhagaván Mahávír O Jaina Dharma		15.00

तित्थयर

जिन धर्म और संस्कृति की महक से
सुरभित करने वाली पत्रिका तित्थयर (मासिक)
के आजीवन सदस्य बनें ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- एक हजार रूपये

JAIN JOURNAL

**One of its Kind, most Valuable,
Quarterly research Journal
on Jainism**

**Life Membership – Rs. 2000/-
Yearly – Rs. 60/-**

श्रमण

बंगाल की भूमि में जैन संस्कृति के
गौरव का प्रतीक श्रमण (बंगला) के
आजीवन सदस्य बनिये ।

आजीवन सदस्यता शुल्क- पाँच सौ रूपये
वार्षिक शुल्क- तीस रूपये

जैन मत तब से प्रचलित है
जबसे संसार में सृष्टि का आरम्भ हुआ ।
मुझे इसमें किसी प्रकार की आपत्ति नहीं है
कि जैन धर्म वैदान्तिक दर्शनों से पूर्व का है ।

Dr. Satish Chandra
Principal Sanskrit College
Calcutta

Estd. Quality Since 1940

BHANSALI

Quality. Innovation. Reliability

BHANSALI UDYOG Pvt. Ltd.

(Formerly : Laxman Singh Jariwala)

Balwant Jain- *Chairman*

A-42, Mayapuri, Phase-1, New Delhi - 110064
Phone : 5144496, 5131086, 5132203
Fax : 91-011-5131184
E-mail : laxman.jariwala@gems.vsni.net.in

जैन धर्म सर्वथा स्वतन्त्र धर्म है
यह किसी का अनुकरण नहीं है ।

Dr. Jacobi

卐

R. C. BOTHRA & COMPANY PVT. LTD

Steams Agents, Handling Agents,
Commission Agents & Transport Contractors

Regd. Office
2, Clive Ghat Street,, (N. C. Dutta Sarani)
6th Floor, Room No. 6, Phone : 220-6702, 220-6400
Fax : (91) (33) 220-9333, Telex : 21-7611 RAVI IN

Vizag Office
28-2-47 Daspalla Centre
Vishakhapatnam - 530020, Phone : 69208/63276
Fax : 91-0891-569326, Gram : BOTHRA

N. K. JEWELLERS
Gold Jewellery & Silver Ware Dealers
2, Kali Krishna Tagore Street, Calcutta - 700 007

IN THE MEMORY OF LATE
Jitendra Singh Nahar, Rabindra Singh Nahar
40/4A, Chakraberia South, Calcutta - 700 020
Phone : (O) 244-1309, (R) 475-7458

SUDERA ENTERPRISES PVT. LTD.
1, Shakespeare Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-7615/7617/2726
Gram : Sudera

VEEKEY ELECTRONICS
36, Dhandevi Khanna Road
Calcutta - 700 054
Phone : 352-8940/334-4140 (R) 352-8387/9885

SPACE 'N' WINGS
Travel Agents
10, Dr. Rajendra Prasad Sarani (Clive Row)
1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 242-7806/8835/5852
P.S.A. Biman Bangladesh Airlines

GAUTAM TRADING CORPORATION
32, Ezra Street, Calcutta - 700 001
6th Floor, Room No - 654
Phone : (O) 250623, (R) 239-6823

SANA FASHIONS
A20/21 Laghu Udyog
I.B. Patel Road, Goregaon East, Bombay - 400 063

H. R. ELECTRICALS
Dealers in Electrical Switch gear, starter & spare parts
Siemens, English Electric L.T/ L.K. B.C.H., etc.
32, Ezra Street, 7th Floor, Room No - 712A
South Block, Calcutta - 700 001
Room No - 314, 3rd Floor
Phone : (O) 255009/1299, (R) 660-4332

VIJAY AJAY
9, India Exchange Place
Room No - 4/2, 4th Floor, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 220-6974/8591/7126, 243-4318
Fax : 220 6974

MAHASINGH RAJ MEGH RAJ BAHADUR
Goal Para, Assam

KASTURCHAND VIJAYCHAND
155, Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-7713

SURAJ MAL TATER
C/o Surajmal Chandmal
137, Bipin Behari Ganguli Street
Calcutta - 700 012
Phone : Shop - 227-1857 (R) 238-0026

TARUN TEXTILES (P) LTD.
203/1, Mahatma Gandhi Road, Calcutta - 700 007
Phone : 238-8677/1647, 239-6097

VISHESH AUTOMATIONS PVT. LTD.
Dealers of IBM, HCL-H.P. Seimens & Toshiba
16D, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Phone : 476-2994, 455-0137
Fax : 91-33-4552151

ELECTRO PLASTIC PRODUCTS (P) LTD.
22, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 073
Phone : 26-3028, 27-4039

MUSICAL FILMS (P) LTD.
9A, Explanade East, Calcutta - 700 069

S. VIJAY CHAND
Vinay Textiles
Whole Sale Merchants
113B Manohar Das Katra, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 238-1388, (R) 247-6105/2750
'Guddi' 10, Jamunalal Bajaj Street
2nd Floor, Calcutta - 700 007

जो हिंसात्मक प्रवृति से विलग है,
वही बुद्ध, ज्ञानी हैं
WITH BEST WISHES

PANKAJ NAHATA
Oswal Manufacturers Pvt. Ltd.
Manufacturers & Suppliers of Garments & Hosiery Labels
4, Jagmohan Mallick Lane, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-4755, (R) 238-0817

KUMAR PAL BAHADUR SINGH DUGAR
2F, Garcha First Lane, Calcutta - 700 019
Phone : (O) 278841/7539, (R) 475-9712/2807

D. K. SYNTHETICS
Whole Sale Dealer
180, Mahatma Gandhi Road
Mullick Kothi, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 232-6040, (R) 684181

JAYSHREE EXPORTS
A Govt. of India Recognised Export House
105/4 Karaya Road, Calcutta - 700 017
Phone : 247-1810/1751, 240-6447
Fax : 91-33247-2897

MAHAVIR COKE INDUSTRIES (P) LTD.
1/1A Biplabi Anukul Chandra Street
Calcutta - 700 072, Ph : 215-1297, 26-4230/4240

APRAJITA
Air Conditioned Market
Calcutta - 700 071, Ph : 282-4649, Resi : 247-2670

AAREN EXPORTERS
12A, Netaji Subhas Road, 1st Floor, Room No. 10
Calcutta - 700 001, Phone : 220-1370/3855

विशुद्ध केशर तथा मैसूर की सुगन्धित चन्दन की लकड़ी,
वरक एवं धूप के लिये पधारें
SHRI JAIN SWETAMBER SEVA SAMITI
13, Narayan Prasad Babu Lane
Calcutta - 700 007, Phone : 239-1408

S. P. SYNTHETICS
House of Exclusive Shirtings
38, Armenian Street, 1st Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 25-7312, Shop : 230-1180, Resi : 241-6831

SIDDHA NIKETAN
Goldel Chance to book flat in Jaipur
8, Ho Chi Minh Sarani
Calcutta - 700 071, Ph : 282-2164/4577

M/S. METROPOLITION BOOK COMPANY
93, Park Street, Calcutta - 700 016
Ph: 226-2418, Resi : 464-2783

ARBEITS INDIA
8/1, Middleton Road, 8th Floor, Room No. 4
Calcutta - 700 071, Ph: 296256/8730/1029
Resi : 2476526/6638/2405126
Telex : 021 2333, ARBI IN, Fax : 226-0174

G. M. SINGHVI
M/S. WILLARD INDIA LIMITED
Mcleod House
13, Netaji Subhas Road, Calcutta - 700 001
Phone : (O) 248-7476-8, (R) 475-4851/1483
Fax : 248-8184

CREATIVE LIMITED
12, Dargah Road, Post Box : 16127, Cal - 17
Ph: (033) 240-3758/1690/3450/0514
Fax : (033) 240 0098, 247 1833

JAYANTI LAL & CO.
20, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Ph: 25-7927/3816/6734, Resi : 240-0440

P. C. JAIN
B-14, Sarvodaya Nagar, Kanpur - 208005
Ph: 29-5552/29-5955

UJJWAL TRADING PVT. LTD.
Regd Office :11, Clive Row, 3rd Floor, Room no. 14,
Cal -700 001, Ph: (O) 242-4131/4756

HARAK CHAND NAHATA
21, Anand Lok, New Delhi - 110049
Ph : 646-1075

S.C. SUKHANI
Santiniketan Building, 4th Floor, Room No. 14
8, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : (O) 242-0525 (R) 239-9548
Fax : 242-3818

MAUJIRAM PANNALAL
Citizen Umbrellas
45, Armenian Street, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 242-4483/9181, (O) 238-1396/1871
Fax : 231-2151/666-6013

A.C. LOCKS CO.
22 Bonfield Lane, Calcutta - 700 007

CHUNNILAL ASHOK KUMAR
30, Cotton Street, 3rd Floor
Calcutta - 700 007, Phone : 238-7764
Resi : 666-4541, 530-9286

ARIHANT JEWELLERS
Mahendra Singh Nahata
57, Burtalla Street, Calcutta - 700 007
Phone : 238-7015, 232-4087/4978

C. H. SPINNING & WEAVING MILLS PVT. LTD.
Bothra ka Chowk, Gangasahar, Bikaner

JAICHAND VINODKUMAR
Exclusive Wholesaler of Fancy Sarees
1/1, Noormal Lohia Lane, 2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : 238-3328/9678, 239-3450
Resi : 247-6785/7086, 40-0325/3995
Fax : 239-3450, 247-7526
Telex : 217761 JVS-IN Gram MINNI-BROS

KUSUM CHANACHUR
Prop. Churoria Brothers
Mfg. by : K. C. C. Food Product
P.O. Ajimganj, Dist. : Murshidabad
Phone: STD (03483)-53234
Calcutta- 230-0432, 231-2802

SURANA MOTORS PVT. LTD.
24A, Shakespeare Sarani
84 Parijat, 8th Floor, Calcutta - 700 071
Phone: 2477450/5264

KALURAM RAMLAL
40A, Armenian Street, Calcutta - 700 001
Phone : 238-9089/239-1264

MOTILAL BENGANI
CHARITABLE TRUST
12 India Exchange Place
Calcutta - 700 001, Phone : 220-9255

A.M. BHANDIA & CO.
23/24 Radha Bazar Street, Calcutta - 700 001
Phone : 242 1022/6456/555-4315 (R)

BALURGHAT TRANSPORT LTD.
170/2/C, Acharya Jagadish Bose Road
Calcutta, Phone : 245-1612-15
2, Ram Lochan Mallick Street
Calcutta - 700 073

ABHAY SINGH SURANA
Surana House
3, Mango Lane, Calcutta - 700 001
Phone : 248-1398/7282

SATISH KUMAR SHYAMSUKHA
11, Pollock Street, Calcutta - 700 001

NARENDRA JAIN
Super Iron Factory
7, Rabindra Sarani, Calcutta - 700 001
Phone : 225-3785/0069
Works : 665-3144
Fax : 91-33-2250198, 943333, 954321

ACARDIA SHIPPING LTD.
22, Tulsiani Chambers
Nariman Point, Bombay - 400 021

SUDIP KUMAR SINGH DUDHORIA
Indian Silk House Agencies
129, Rasbehari Avenue
Calcutta, Phone : 464-1186

CALTRONIX
12, India Exchange Place
3rd Floor, Calcutta - 700 001
Phone : 220-1958/4110

BOTHRA & BOTHRA
12, Noormal Lohia Lane
2nd Floor, Calcutta - 700 007
Phone : Shop - 230-0216, (R) : 259657, 259312

GRAPHIC PRINT & PACK
12C, Lord Sinha Road, Calcutta - 700 071
Phone : (O) 242-4916/8380
Resi : 343-8302, Pager : 6902-315070

Dr. ANJULA BINAYIKA
M.D. DND, M.R.C.O.G (London)
12, Prannath Pandit Street
Calcutta - 700 025, Phone : 474-8008

ABHANI BACHHRAJ
Fancy Saree Emporium
156, J.L. Bajaj Street, 1st Floor, Calcutta - 700 007
Ph : Shop- 238-6582, 239-0079
Resi- 483988/2573

CHOPRA TYRES
Unit of Fatehchand Chopra & Family
Tyre Resoler
Sakunta Road, Agartala, (Tripura)

ASHOK TRADING COMPANY
Authorised Distributors of
J.K. Engineering Steel Files & Drills I.T. Cuttings, Tools
Miranda Tools & (Hacksaw Blades) BIPICO-ECLIPSE
18C, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : 242-2345/4461

BHANWARLAL KARNAWAT
BEEKY TAI FEB UDYOG PVT. LTD.
City Centre, Room No. 534 & 535, 5th Floor
16, Synagauge Street, Calcutta - 700 001
Ph : 238-7281, 230-1739

AKHILESH KUMAR JAIN
JUTE BROKER
9, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Phone : 221-4039, 210-2760, (R) : 660-1604

COMPUTER EXCHANGE
'Park Centre' 24 Park Street
Calcutta - 700 016, Phone : 295047, 299110

PARSAN BROTHERS
Diplomatic & Bonded Stores Suppliers
18-B, Sukeas Lane, Calcutta - 700 001
Ph : (O) 242-3870/4521, Fax : 242-8621

J. KUTHARI PVT. LTD.
12, India Exchange Place
Calcutta - 700 001
Ph: 220-3142, Resi : 475-0995, 476-1803
Fax : 221-4131

SATKAR CONSTRUCTION PVT. LTD.
Gujrat Mansion, 5th Floor
14, Bentick Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-4730/6256/9867, Direct : 248-6477/6169
Resi : 478-0765/458-3397, Mobile : 98300-30618
Fax : 248-6169

AJAY DAGA, AJAY TRADERS
203/1 M.G. Road, Calcutta - 700 007
Phone : (O) 238-9356/0950
(Fact) 557-1697/7059

DUGAR & CO. JUTE BROKER
12, India Exchange Place, (3rd Floor)
Calcutta - 700 001
Phone : 220-1283/0813, Resi : 555-6039

KUMAR CHANDRA SINGH DUDHORIA
7, Camac Street, Calcutta - 700 017
Phone : 242-5234/0329

BALCHAND SOHANLAL
5, Karbala Mohammed Street
Calcutta - 700 001, Phone : 953902/252759
Fax : 033-252902

BHEEKAM CHAND DEEP CHAND BHURA
D. C. Group Pvt. Ltd.
Sagar Estate, 5th Floor
2, Clive Ghat Street, Calcutta - 700 001
Phone : 220-4779/0131/5721

SUNDERLAL DUGAR
R.D.B. Industries Ltd.
Regd. Off : Bikaner Building
8/1 Lal Bazaar Street, Calcutta - 700 001
Ph : 248-5146/6941/3350, Mobile : 9830032021
Office : Tobacco House
1/2, Old Court House Corner
Calcutta - 700 001, Ph : 220-2389/3570/3569

SMT. KUSUM KUMARI DOOGAR
166, Jodhpur Park, Calcutta -700068
Phone: 4720610

GLOBE TRAVELS
Contact for better & Friendlier Service
11, Ho Chi Minh Sarani, Calcutta - 700 071
Phone : 282-8181

SURENDRA SINGH BOYED
Sovna Apartment
15/1 Chakrabaria Lane, Calcutta - 700 026
Phone : 476-1533

APARAJITA BOYD
9/10, Sitanath Bose Lane, Salkia
Howrah - 711 106, Phone : 665-3666/2272

BOYD SMITHS PVT. LTD.
8, Netaji Subhas Road
B-3/5 Gillander House, Calcutta - 700 001
Ph: (O) 220-8105/2139, Resi : 244-0629/0319

B. W. M. INTERNATIONAL
Manufacturers & Exporters
Peerkhanpur Road, Bhadohi - 221401 (U.P.)
Ph : (O) 05414-25178, 25778, 25779
Bikaner Ph : 0151-522404, 25973
Fax: 05414-25378 (U.P.) 0151- 61256 (Bikaner)

RATAN LAL DUNGARIA
16B, Ashutosh Mukherjee Road
Calcutta - 700 020, Ph: (R) 455-3586

ROYAL TOUCH OVERSEAS CORPORATION
47, Pandit Purushottam Roy Street, 2nd Floor,
Calcutta -700 007, Ph : (033) 230-1329, 232-1033
Fax: 91-33-2302413

NAHAR
5/1, A.J.C. Bose Road, Calcutta - 700 020
Ph: 247-6874, Resi : 244-3810

GRAPHITE INDIA LIMITED
Pioneers in Carbon/Graphite Industry
31, Chowranghee Road, Calcutta -700016
Ph: 2264943, 292194, Fax: (033) 2457390

LALCHAND DHARAMCHAND
Govt. Recognised Export House
12, India Exchange Place, Calcutta - 700 001
Ph: (B) 220-2074/8958 (D) 220-0983/3187
Cable : SWADHARMI, Fax : (033) 2209755
Resi : 464-3235/1541, Fax : (033) 4640547

PRITAM ELECT. & ELECTRONICS PVT. LTD.
22, Rabindra Sarani, Shop No. G-136
Calcutta - 700 073, Ph: (033) 262210

मथुरा के जैन स्तूप इस बात के
स्पष्ट और अकाट्य प्रमाण हैं कि
जैन धर्म प्राचीन है और
प्रारम्भ में भी वर्तमान स्वरूप में था ।

Shri Vinsent Smith

卐

RADHIKAS

ICE CREAM PARLOUR & FAST FOOD CENTRE

SHIVAM CHAMBERS
53, Syed Amir Ali Avenue
(Near Ice Scating Rink)
Calcutta - 700 019
Phone : 247-2602

THE PURE VEGETARIAN PARLOUR FOR CHOICEST & TASTIEST IDLIS, DOSAS, BURGERS, CHATS AND MANY MORE DELICIOUS FOODS WITH VARITIES OF ICE-CREAMS.

जैन संस्कृति मनुष्य संस्कृति है,
जैन दर्शन भी मनुष्य दर्शन ही है,
जिन देवता नहीं थे, किन्तु मनुष्य थे ।

Prof. Harisatya Bhattacharya

We are, always ready to most the Exact type of your requirement

AUCKLAND INTERNATIONAL LTD.

(UNIT : AUCKLAND JUTE MILLS)

'KANKARIA ESTATE'

6, Little Russel Street
Calcutta - 700 001

A Recognised Export House
Cable : SWANAUCK, CALCUTTA
Telex : 21-2396 AUCK IN
Codes : BENTLEY'S SECOND
Phone : 29-2621, 2623, 7199, 7698, 7710

Registered Office &
'JUTE MILL'
At Jagatdal, 24 Parganas
Phone : BHATPARA 2757, 2758 & 2038

एतिहासिक सामग्री से यह सिद्ध होता है कि आप से
पांच हजार वर्ष पहले भी जैन धर्म की सत्ता थी ।

Dr. Prannath (Historian)

GYANI RAM HARAKH CHAND SARAOGI CHARITABLE TRUST

P-8, Kalakar Street
Calcutta - 700 007
Phone : 239-6205/9727

Founders of

Shri Gyaniram Harakchand Saraogi College
of Arts & Commerse
Sujangarh

Shri Gyaniram Saraogi Homeo Hall

Shri Gyaniram Saraogi Physiotherapy Centre

भागवत पुराण के अनुसार
ऋषभदेव जैन धर्म के संस्थापक हैं ।

Shri Radha Krishnan

卐

HINDUSTAN GAS & INDUSTRIES LTD.
ESSEL MINING & INDUSTRIES LTD.

Registered Office
"Industry House"
10, Camac Street, Calcutta - 700 017
Telegram : 'Hindogen' Calcutta
Phone : (033) 242-8399/8330/5443
Fax : (91) 33 2424998/4280

Manufacturers of
Engineers' Steel Files & Carbon Dioxide Gas
At Tangra (Calcutta)
IronOre and Manganese Ore Mines
In Orissa
S. G. Malleable & Heavy Duty Iron Castings
At Halol (Gujrat)
Ferro Vanadium and Ferro Molybdenum
At Vapi (Gujrat)
High Purity Nitrogen Gas
At Mangalore
H.D.P.E./P.P. Woven Sacks
At Jagdishpur (U.P.

सम्यग्दर्शन के बिना ज्ञान नहीं होता है। ज्ञान के बिना चरित्र के गुण नहीं होते। गुणों के बिना भक्ति नहीं होती और भक्ति बिना निर्वाण शाश्वत् आत्मानन्द प्राप्त नहीं होता।

G.C. Jain

A-40 N.D.S.E - II
New Delhi - 110049
Tel : 625-7095/0330

WB/NC - 330

VOL XXII No. 5

'Titth ayara'

Registered with the registered
of Newspapers for India under
No. R.N. 3018/77

August 1998

अरिहंते सरणं पवज्जामि
सिद्धे सरणं पवज्जामि
साहु सरणं पवज्जामि
केवलि पन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि

"आत्मा के साथ ही युद्ध करो, बाहरी दुश्मनों
के साथ युद्ध करने से क्या लाभ? आत्मा को आत्मा
के द्वारा ही जीत कर मनुष्य सच्चा सुख पा सकता है।"

Kamal Singh Rampuria
Rampuria Mansions
17/3 Mukhram Kanoria Road, Howrah
Phone No. : 666 7212/7225